नीति, नियम और प्रेमपूर्ण हो प्रशासन-पाटिल

आबू रोड, 29 मई, निसं। राजस्थान तथा पंजाब के राज्यपाल महामहिम श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि सरकार की नीतियों और योजनाओं को जमीनी हकीकत उतारने में प्रशासकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रशासन व्यवस्था नीति, नियम और प्रेमपूर्ण होनी चाहिए। सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए कानून जरूरी है परन्तु उसमें समन्वय होना चाहिए जिससे लोगों पर इसका बुरा असर न पड़े।

महामहिम श्री पाटिल ब्रह्माकुमारीज के शांतिवन परिसर में राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के प्रशासक प्रभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय प्रशासका महासम्मेलन के उदघाटन अवसर पर भारत तथा नेपाल से आये प्रशासकों, प्रबन्धकों तथा कार्यपालकों को सम्बोधित कर रहे थे। आगे श्री पाटिल ने कहा कि कभी प्रशासनिक व्यवस्था में मनमानी की स्थिति नहीं होनी चाहिए। इससे समाज पर बुरा असर पड़ता है। कभी-कभी सरकार की अच्छी नीतियों में बुराईयां भी जाती है जो लोग वृहद सोच के नहीं होते हैं वे बुरे रास्ते को अपना लेते, जो सरकार और समाज दोनों के लिए हानिप्रद होता है।

ब्रह्माकुमारीज संस्था सर्वांगिण विकास को लेकर लम्बे समय से कार्य कर रही है। जिसका असर यहाँ से जुड़े हुए लोगों पर साफ नजर आता है। प्रशासक को कभी भी केवल वर्तमान सोच नहीं रखनी चाहिए। उसे सदैव दूरादेशी सोच होनी चाहिए जिससे आने वाले समय में उसे क्रियान्वित किया जा सके। उन्होंने महाभारत काल में राजकाज की व्यवस्था का वर्णन करते हुए कहा कि विदुर नीति सदैव कल्यणकारी रही। जो व्यक्ति लालच और स्वाथपूर्ण राज्य करता है उससे देश व समाज की तरक्की कभी नहीं हो सकती। इस महासम्मेलन के दौरान जो भी बाते आयेंगी मेरा पूर्ण विश्वास है कि उससे प्रशासनिक व्यवस्थाओं में निखार आयेगा।

दिल्ली के मुख्य सचिव राकेश मेहता ने कहा कि प्रशासक का अर्थ बेहतर समाज व्यवस्था बनाये रखना होता है। सरकार जो भी जनहित में कदम उठाती है उसे अमल में लाना अधिकारियों और कर्मचारियों का कार्य होता है। परन्तु दृढ़तापूर्वक किये गये कार्य से सफलता मिलती है। उन्होंने राजयोग की शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह एक जीवन के महत्वपूर्ण औषधि की तरह कार्य करता है। इससे कार्य करने की क्षमता में विकास होता है।

संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र0 कु0 बृजमोहन ने इच्छा शक्ति पर नियंत्रण की बात करते हुए कहा कि हमारी इच्छायें ही अनेक प्रकार के विचारों को जन्म देती है। इसलिए जब हमारी इच्छायें सीमित होगी तब हमारी आवश्यकतायें भी सीमित हो जायेगी। प्रशासक अर्थात सदैव देने वाला, जो भी उसके सामने आये उससे सकारात्मक विचार ओर ऊर्जा लेकर जाये। प्रशासक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 आशा ने प्रशासको को आत्म शक्ति को विकसित कर श्रेष्ठ प्रशासन की कला करने पर जोर देते हुए कहा कि जब तक हमे यह नहीं मालूम होगा कि मै कौन हूँ और मेरा दायित्व क्या है तब तक हम बेहतर प्रशासन नहीं कर सकते। अन्त में ज्ञान सरोवर की निदेशिका ब्र0 कु0 डा0 निर्मला ने मन और तन को स्वस्थ रखने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और ईश्वर का सानिध्य अपनाने पर जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन जयपुर की ब्र0 कु0 पूनम ने किया तथा स्वागत प्रशासक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र0 कु0 हरीश ने किया।

महामहिम का भव्य स्वागत

राज्यपाल महामहिम श्री शिवराज पाटिल का शांतिवन पहुंचने पर संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वेर, जनसम्पर्क एवं सूचना निदेशक ब्र0 कु0 करूणा, शांतिवन प्रबन्धक ब्र0 कु0 भूपाल तथा कार्यकारी सचिव ब्र0 कु0 मृत्युंजय ने गुलदस्ते भेंटकर स्वागत किया। कार्यक्रम के पश्चात वे डायमंड हॉल का अवलोकन किया कर दादी प्रकाशमणि की समाधि स्थल प्रकाश स्तम्भ पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके पश्चात वे दादी काटेज गये तथा दादीजी के कमरे का अवलोकन ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी तथा ब्र0 कु0 मुन्नी से भेंटकर माउण्ट आबू के लिए रवाना हो गये। इस अवसर पर सभी प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे।

फोटो, 29 एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4, 5, 6 कार्यक्रम का दीप जलाकर उदघाटन करते अतिथि, सम्बोधित करते महामहिम, प्रकाश स्तम्भ पर श्रद्धांजलि अर्पित करते श्री पाटिल तथा स्वागत करते संस्था के पदाधिकारी।